नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Rajdhani - 20 Jun 2024 - 20raj3
epaper.navabharat.news

सुई के छेद से वेसलप्लास्टी कर रीढ़ की हड्डी के फ्रैक्चर का इलाज

इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. पात्रे एवं टीम ने पिन होल तकनीक से किया उपचार

अम्बेडकर अस्पताल में 79 वर्षीय महिला को 9 माह से जारी दर्द से मिला छुटकारा

नवभारत रिपोर्टर। रायपुर।

पं. जवाहरलाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय के रेडियोलॉजी विभाग ने राज्य में पहली बार सुई के छेद से वेसलप्लास्टी कर रीढ़ की हड्डी के फ्रैक्चर का इलाज कर बुजुर्ग महिला को दर्द से राहत दिलाई। इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. विवेक पात्रे के नेतृत्व में टीम ने पिन होल तकनीक से उपचार किया।

79 वर्षीय महिला रीढ़ की हड्डी के फ्रैक्चर (नॉन हीलिंग वर्टिब्रल कम्प्रेशन फ्रैक्चर) से पीड़ित थी। वह पिछले 9 महीने से असहनीय

दर्द से परेशान थीं और एक महीने से वह बैठ भी नहीं पा रही थी। सुई की छेद से की गई पूरी प्रक्रिया के बाद महिला आधे घंटे के बाद बैठने में समर्थ हो गई। उसे उसी दिन डिस्चार्ज भी कर दिया गया।

बुजुर्ग को को जब अम्बेडकर अस्पताल में भर्ती कराया गया, तब डॉ. पात्रे ने नई तकनीक से राहत दिलाने का निर्णय लिया। उन्होंने बताया, इस प्रक्रिया में सुई की एक

छेद के जरिये बोन फिलिंग बैलून कंटेनर सिस्टम के माध्यम से रीढ़ के हड्डी के अंदर छिद्रयुक्त बैलून में निडिल की सहायता से बोन सीमेंट इंजेक्ट कर वर्टिब्रल कम्प्रेशन से राहत दी गई। यह राज्य की पहली वेसलप्लास्टी है, जिसमें पिन होल तकनीक से बीमारी का उपचार किया गया। वेसलप्लास्टी की सुविधा इससे पहले केवल महानगरों के बड़े अस्पतालों में ही होती थी। यह पहली बार है जब राज्य के किसी अस्पताल में इस प्रकार की नई तकनीक से वेसलप्लास्टी की गई है।

डॉ. पात्रे के साथ टीम में डीकेएस हॉस्पिटल के न्यूरोसर्जन डॉ. मनीष टावरी, एनेस्थेटिस्ट डॉ. प्रतिभा जैन एवं डॉ. वृतिका, रेजिडेंट डॉ. पूजा कोमरे, डॉ. मनोज मंडल, डॉ. प्रसंग श्रीवास्तव, डॉ. घनश्याम वर्मा, डॉ. लीना साहू, डॉ. नवीन कोठारे, डॉ. सौम्या, डॉ. अंबर, रेडियोग्राफर नरेश साहू, जितेंद्र प्रधान, नर्सिंग स्टाफ ऋचा एवं यश शामिल रहे।

डॉक्टरों ने जोखिम लिया

डॉ. पात्रे ने बताया कि अधिक उम्र के मरीजों में कोई भी प्रक्रिया काफी जोखिम भरी रहती है, फिर भी रिस्क लेते हुए हमारी टीम ने इस प्रक्रिया के लिए तैयारी की। इस प्रक्रिया के लिए तीन मिनट बेहद अहम होते हैं। पॉलीमेथिल मेथाक्रिलेट यानी बोन सीमेंट को तैयार कर तीन मिनट के भीतर ही इंजेक्ट करना रहता है क्योंकि यदि इसमें देरी की गई तो बोन सीमेंट बाहर के वातावरण में तुरंत ठोस अवस्था में परिवर्तित हो जाता है और जिस स्थान पर है वहीं जम जाता है इसीलिए बोन सीमेंट को प्रोसीजर से पहले फ्रिज के अंदर बेहद कम तापमान में रखा गया, जिससे बॉडी में इंजेक्ट करने के दौरान वह देरी से जमे।

एकदम नई तकनीक

वेसलप्लास्टी एकदम नई तकनीक है। इस तकनीक से पहले वर्टिब्रोप्लास्टी करते थे, जिसमें पैडीकलद्वारा वर्टेब्रल बॉडी में पहुंचकर, वर्टिब्रल बॉडी के अंदर बोन सीमेंट डालते थे, तो बोन सीमेंट डालने से कई बार स्पाइनल कैनाल में रिसाव की संभावना रहती थी। यदि गलती से सीमेंट स्पाइन की वेन्स के द्वारा लंग्स में चला जाये तो पल्मोनरी एम्बोलिज्म होने की संभावना रहती है। इसके बाद में काइफोप्लास्टी आया। काइफोप्लास्टी में बॉडी के अंदर बैलून डालकर जगह बनाते थे और उस जगह में बोन सीमेंट डालते थे। इसमें भी वही खतरा था लेकिन वर्टिब्रोप्लास्टी की तुलना में कम था।